प्रभु गिरिधारी आरती

जय जय गिरिधारी प्रभु, जय जय गिरिधारी।
दानव-दल-बलहारी, गो-द्विज-हितकारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

जय गोविन्द दयानिधि, गोवर्धन-धारी।
वन्शीधर बनवारी ब्रज-जन-प्रियकारी॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

गणिका-गीध-अजामिल गजपति-भयहारी।
आरत-आरति-हारी, जग-मन्गल-कारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

गोपालक, गोपेश्वर, द्रौपदि-दुखदारी।
शबर-सुता-सुखकारी, गौतम-तिय तारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

जन-प्रह्लाद-प्रमोदक, नरहरि-तनु-धारी।
जन-मन-रञ्जनकारी, दिति-सुत-सन्हारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

टिट्टिभ-सुत-सन्रक्षक रक्षक मन्झारी।
पाण्डु-सुवन-शुभकारी कौरव-मद-हारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

मन्मथ मन्मथ मोहन, मुरली-रव-कारी।
वृन्दाविपिन-विहारी यमुना-तट-चारी॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

अघ-बक-बकी उधारक तृणावर्त-तारी।
बिधि-सुरपति-मदहारी, कन्स-मुक्तिकारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

शेष, महेश, सरस्वति गुन गावत हारी।
कल कीरति-बिस्तारी भक्त-भीति-हारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

नारायण शरणागत, अति अघ, अघहारी।
पद-रज पावनकारी चाहत चितहारी ॥

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।

PANOT BOOK